OM KUMAR 'KRISHNAKANCHAN'

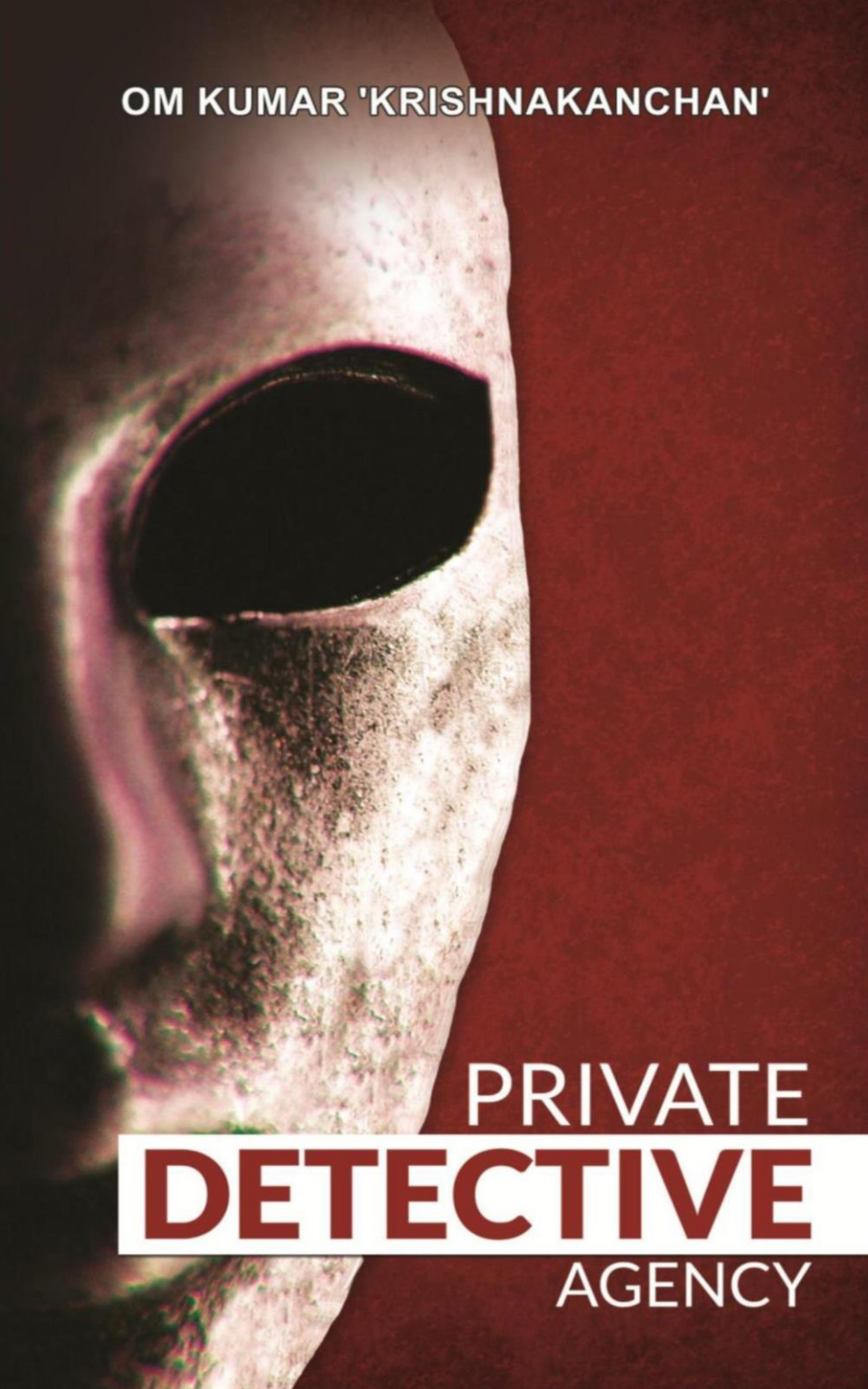

PRIVATE DETECTIVE AGENCY

Private
Detective Agency

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-81-19927-28-9

Price: ₹ 286.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

Private Detective Agency

Om Kumar 'Krishnakanchan'

इस उपन्यास के सभी पात्र, चरित्र एवं घटनायें
काल्पनिक हैं, इसका वास्तविकता से कोई
सम्बन्ध नहीं हैं।

कामना

इस दुनिया में एक बार पैसा कमाना तो आसान है, पर सम्मान के नाम कमाना बेहद कठिन है। मेरे लिए तो यह दोनों कार्य बेहद कठिन थे। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण बड़ी मुश्किल से अपनी पढ़ाई कर पाता था। यह श्रृंखला कई बार टूटी भी, पर माँ सरस्वती की असीम कृपा से यह बार–बार जुड़ जाती। साहित्य में मेरी रूचि स्नातक में आने पर और भी बढ़ गई। अपने कॉलेज की लाइब्रेरी देखकर मेरा मन फूला ना समाया, लगा हजारों दोस्त इन अलमारियों में बैठे मेरा इंतजार कर रहे हैं कि मैं उनसे बात करूँ, वो अमृत पी जाऊँ, जो वे मुझे पिलाना चाहते हैं।

इन्ही किताबों को पढ़कर मैंने जाना कि जीवन कमाने और भरण–पोषण के अलावा भी हैं, ये सब तो सब करते ही हैं, तो क्यों न कोई ऐसा काम किया जाये कि दुनिया आपको सदैव याद रखे। यह काम लेखन है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मैं एक लेखक के रूप में अपने प्यारे भारत देश की निरन्तर सेवा करूँगा और मुझे मेरे लेखन कार्य के लिए जाना जायेगा।

ओम कुमार ''कृष्णकंचन''

अनुरोध

यह उपन्यास, कहने को तो एक अपराध कथा है, पर यह अपराध कथा है भी या नहीं, इसका निर्णय तो पाठक ही करेंगे। यह निर्णय मैं अपने प्रिय पाठकों पर छोड़ता हूँ। वे ही इसे पढ़कर इसमें उपस्थित पात्रों एवं उनके चरित्रों का भलीभाँति आंकलन कर निष्कर्ष निकाले। पर मैं इतना विश्वास जरूर दिलाता हूँ कि, इस उपन्यास का प्रत्येक पात्र अपने आप में अद्‌भुत है। उनके कार्य कलापों पर तथा उनके चरित्र आपके मन–मस्तिक पर अपनी अमिट छाप छोड़ेंगे। ये पात्र कहीं पर भावुक हैं, निश्चल हैं, प्रेमी हैं, तो कहीं पर वे अपराध प्रवृत्ति के हैं। उनमें स्वार्थीपन है, वे लालच के अंधकार में दबे हैं। अतः रहस्यों से परिपूर्ण यह उपन्यास आपका सार्थक मनोरंजन करेगा।

और अन्त में, मेरे प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि आपकी आलोचनाओं एवं सुझावों की प्रतीक्षा मुझे रहेगी।

ओम कुमार ''कृष्णकंचन''

आभार

एजूक्रिएशन पब्लिकेशन का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होनें मेरे प्रयासों को एक सुगम एवं स्पष्ट दिशा प्रदान की और हर क्षण मुझे सहयोग प्रदान किया।

1

एस.पी निजाम चौधरी और डी.एस.पी. रोहित कपूर घटनास्थल पर पहुँचे, तो वह गैलरी जहाँ लिफ्ट थी और लिफ्ट के बराबर में बनी सीढ़ियों पर और उस कमरे तक जहाँ पर कत्ल हुआ था, पत्रकार, मीडिया, कत्ल हुये व्यक्ति के रिश्तेदार, होटल के लोगों और पुलिस वालों से खचाखच भरा हुआ था। जैसे–तैसे भीड़ को पार करते हुये एस.पी निजाम चौधरी, डी.एस.पी. रोहित कपूर और एक पुलिस वाला जिसके हाथ में एक काला बैग था, वहाँ तक पहुँचे। रूम के बाहर पुलिस ने लोगों को रोक रखा था। निजाम चौधरी आगे–आगे और रोहित कपूर पीछे थे। पुलिस वाले, जो वहाँ पहले से मौजूद थे उनको देखकर सैलूट कर रहे थे। दोनों लोग कमरे में दाखिल हुये, बैग थामे पुलिसवाले ने बैग को वहीं दरवाजे से थोड़ा अन्दर कमरे एक कोने में रख दिया और खुद पुलिस वालों के साथ दरवाजे पर खड़ा हो गया। कमरे के बेड पर एक लगभग 63 या 64 वर्षीय आदमी बेड पर चित पड़ा हुआ था। कमरे में एक फोटोग्राफर पहले से मौजूद था, जो विभिन्न ऐंगल से फोटो शूट कर रहा था। फोटोग्राफर के फोटो लेने के बाद उसने निजाम चौधरी और रोहित कपूर को सिर हिलाकर अभिवादन किया और कमरे के दरवाजे के पास आकर खड़ा हो गया। निजाम चौधरी ने बेहद करीब से लाश का मुयावना करना शुरू किया। रोहित कपूर भी उनके पास आकर खड़े हो गये। लाश के दोनों हाथ चित अवस्था में फैले थे, आँखें बन्द थी, घुटने से नीचे पैर बेड से लटके थे और दो गोलियों के घाव थे। एक गोली पेट के थोड़े नीचे दाएँ तरफ मारी गई थी और दूसरी गोली ठीक दिल पर मारी गई थी। निजाम चौधरी ने अनुमान लगाया

कि, ''दूसरी गोली तब मारी गई होगी जब पहली गोली में यह शख्स तड़पकर बेड पर गिर पड़े होंगे, बचने की कोई गुंजाइश न रहे, इसलिए कातिल ने ठीक दिल वाले हिस्से पर गन सटाकर फायर किया होगा। पहली गोली पेट के नीचे दाएँ तरफ मारने का कारण क्या होगा?'' उन्होंने अपने दिमाग पर जोर डाला। मगर उनका ध्यान कमरे की स्थिति पर आया। कमरे की सारी चीजें व्यवस्थित थी, कहीं भी किसी चीज को न तो छेड़ा गया था और न ही किसी हाथापाई के घटित होने का अंदेशा दिखाई दे रहा था। लाश के गले में एक सोने की चेन थी, जिसमें तीन छोटे–छोटे हीरे चमक रहे थे। बाहर से शोर–शारबे की आवाजें आ रही थी। लेकिन इनका ध्यान केवल कमरे में पड़ी लाश पर था। सेठ जी के बाएँ हाथ में एक कीमती घड़ी थी, जिसकी कीमत करीब दो लाख या फिर इससे अधिक की थी। सोने का भारी भरकम एक कड़ा दाएँ हाथ में था। सेठ जी काफी भारी भरकम शरीर के मालिक थे। उनके शरीर पर सफेद शर्ट, नीली पैन्ट और नीला कोट था। ''सेठ जी का बर्थडे था क्या?'' रोहित कपूर ने निजाम चौधरी का ध्यान आकर्षिक किया। निजाम चौधरी ने अपनी नजर मृतक सेठ से उठाकर रोहित कपूर के चेहरे पर लगा दी। ''हाँ यार, लगता है सेठ जी का जन्मदिन था, वरना इतने सारे गिफ्ट के पैकेट्स, बूकीज और ग्रीटिंग कार्ड्स आदि का क्या मतलब?'' गिफ्ट के पैकेट्स, बूकीज और ग्रीटिंग कार्ड्स जो न केवल बेड पर थे, बल्कि आदमकद शीशे के अग्रभाग भाग पर, फर्श पर पड़े ईरानी कालीन पर बड़ी मात्रा में गिफ्ट्स रखे थे। शर्ट का वह भाग जहाँ पर गोली लगी थी, काला सा हो गया था खून बराबर रिसता रहा था जो अब गाढ़ा होकर जम सा गया था। सेठ जी भारी–भरकम कसरती शरीर के मालिक थे, रंग गोरा और मुँह पर मूछें थी। उनके चेहरे को देखकर लगता था कि सेठजी मरे नहीं हैं बल्कि सो रहे हैं। हत्या का भय या किसी भी प्रकार की निराशा का कोई चिन्ह उनके गोरे चेहरे पर नहीं था। निजाम चौधरी ने मृतक के हाथ में बँधी घड़ी पर नजर डाली, रात के साढे ग्यारह बजे थे। निजाम चौधरी ने हाथ उठाकर कहा ''रोहित, ग्लब्स।''

रोहित कपूर ने दरवाजे के पास रखे बैग से ग्लब्स निकाले और निजाम चौधरी को थमा दिये, उन्होंने दोनों ग्लब्स चढ़ाये और बारीकी से निरीक्षण करना शुरू कर दिया। उन्होंने मृतक के हाथ को सीधा किया, घड़ी का गोल डायल वाला हिस्सा कलाई के नीचे दब गया और उनकी हथेली सामने आ गई। फिर उन्होंने घुटने के बल बैठकर मृतक के पैर पर ध्यान दिया, रेडचीफ के शूज़ पहने थे। निजाम चौधरी ने उनके पैरों के आस–पास नजर दौड़ाई, और लगभग 5 मिनट कालीन बहुत बरीकी से निरीक्षण करने बाद वे अपने घुटने पर दोनों हाथ रखकर खड़े हो गये और मृतक के बाएँ तरफ आ गये, सिरहाने की तरह भी गिफ्ट, बुकीज और कार्ड्स थे। हर कार्ड, बुकीज और गिफ्ट पर देने वाले का नाम था। कार्ड देखने के बाद उन्होंने वहीं रख दिये और आदमकद शीशे के सामने आ गये, अपने आपको उन्होंने घुटनों के बल झुकाया और आदमकद शीशे में लगी डिरयर को खोला, जो दाहिनी तरफ थी। उसमें भी कई प्रकार के कार्ड्स थे, दूसरी डिरयर में वीजिटिंग कार्ड थे।

''आप शायद डायरी ढूँढ़ रहे हैं सर!'' रोहित कपूर ने अनुमान लगाकर पूछा।

निजाम चौधरी ने मुड़कर देखा, रोहित कपूर वहीं खड़े थे।

''हाँ रोहित! क्या तुम बता सकते हो कि इनकी डायरी कहाँ हो सकती है?''

''अक्सर लोग डायरी अपने बेड के सिर के पास या उसके आस–पास रखते हैं,पर क्या पता, ये डायरी लिखते भी हैं या नहीं!'' निजाम चौधरी से रोहित कपूर ने वहीं खड़े–खड़े ही उत्तर दिया।

''हाँ, बड़े बिजनेसमैन हैं, खाने और सोने को समय भर मिल जाये, वही बहुत है इनके लिये।''

जिस स्टूल पर टेबल लैम्प रखा था वह केवल स्टूल ही था और स्टूल पर केवल इतनी जगह थी कि टेबललैम्प और छोटी सी ट्रे आ सकती थी। दीवार से सटे बेड के लगभग दो मीटर की दूरी पर दूसरी दीवार में फिक्स अलमारी थी। जो दरवाजे के ठीक समाने पड़ती थी। अगर दरवाजा खुला हो और कोई

व्यक्ति कमरे की तरफ आ रहा हो तो, वह अलमारी को स्पष्ट देख सकता था।

रोहित कपूर ने अलमारी पर नजर दौड़ाई, अलमारी की चाबी लटक रही थी। उन्होंने ऊपर वाली साइट खोली जहाँ कपड़े ही कपड़े थे, यही हाल नीचे वाले दराज का भी था।

''सबसे पहले लाश को किसने देखा?''

एक सिपाही जो दरवाजे पर ही खड़ा था, बोला ''मिसेज केसरवानी ने सर, इनकी पत्नी ने।''

निजाम चौधरी ने सिर हिलाया। फिर रोहित कपूर को सम्बोधित करते हुये बोले ''रोहित, लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दो और यह कमरा सील करावाओ।''

2

यह उसी होटल का कमरा नं. 108 था। इस कमरे में माणिक लाल केसरवानी की पत्नी ठहरी हुई थी और उनके दो बेटे अरविन्दर केसरवानी और छोटे बेटे दीपेन्दर केसरवानी थे। होटल का मैनेजर भी वहीं था, जिसे रोहित कपूर ने बुलबाया था।

बेड पर माणिक लाल केसरवानी की पत्नी और उनके बड़े बेटे अरविन्दर केसरवानी बैठे थे, जबकि अन्य लोग कुर्सियों पर बैठे थे। निजाम चौधरी ने एक–एक नजर सब पर डाली फिर वे माणिक लाल केसरवानी की पत्नी से बोले

''मुझे सेठ जी की हत्या पर दुःख है, पर मैडम पुलिस कार्यवाही में आपका सहयोग, बल्कि यहाँ उपस्थित सभी लोगों के सहयोग की आवश्यकता होगी।'' निजाम चौधरी ने अपने शब्दों में संवेदना प्रकट की।

माणिक लाल केसरवानी की पत्नी की आँखों में आँसू थे। उनके बड़े बेटे, अपने माँ के हाथों अपने हाथों में थामे हुए थे। मानो सांत्वना दे रहे हों।

''आप जो कुछ भी पूछेंगे, उसका उत्तर आपको मिलेगा। अम्मा और हमारे दुःख को कोई नहीं समझ सकता।'' अरविन्दर केसरवानी ने भर्राये गले से कहा।

''आपका नाम मैडम?''

''मीरालाल केसरवानी'' बुजुर्ग महिला ने बेहद मरी हुई आवाज में उत्तर दिया।

''सबसे पहले सेठ जी को मृत अवस्था में किसने देखा?''

''मैने!'' मीरालाल केसरवानी ने अपना दाहिना हाथ अपने सीने पर रखते हुए कहा।

''कितने बजे?''

''लगभग दस बजे या इसके करीब बाद।''

''आपका कमरा नं. 108 और सेठ जी का कमरा नं. 112, इसका कोई खास कारण?''

मीरा लाल केसरवानी ने अपनी आँखे बंद कर ली थी। कुछ क्षण बाद उन्होंने आँखों खोली , मगर कुछ बोली नहीं।

''अम्मा को घुटनों के दर्द की गम्भीर शिकायत है, इसलिए यह लिफ्ट के पास वाला कमरा सदा उनके नाम से बुक रहता है।'' उत्तर बड़े बेटे ने दिया।

''और कमरा नं. 112 जो लिफ्ट से काफी दूरी पर है इसका कोई कारण?'' निजाम चौधरी ने पूछा।

''उत्तर बड़े बेटे ने ही दिया ''कमरा नं. 112 पिता जी का लक्की नंबर रहा है सदा से ही, इसलिए वो कमरा उनके लिए बुक रहता है और बाकी शेष रूमों की स्थिति? कमरा नं. 109 हमारी कम्पनी से संबंधित कोई मेहमान आता है तो वह इसी रूम में रहता है, कमरा नं. 110 दीपेन्दर, अरविन्दर केसरवानी ने कुर्सी पर सिर झुकाये अपने छोटे भाई की तरफ इशारा किया। इसके लिए है और कमरा नं. 111 मेरे लिए है।''

''कमरा नं. 112 की एक और खास बात है सर,'' इस बार अरविन्दर केसरवानी के चुप होते ही मैनेजर बोला

''क्या?'' निजाम चौधरी के मुँह से निकला।

'सर, आपने लिफ्ट में ध्यान दिया होगा कि एक सी.सी. कैमरा लिफ्ट में है। जब आप यहाँ उतरते हैं तो एक कैमरा लिफ्ट के सेंटर पर है, यानि गली में कोई व्यक्ति लिफ्ट तक आयेगा तो वह कैमरे की कैद में आ जाएगा। और कमरों के सामने बाकी दीवार पर पाँच कैमरे, जो इस प्रकार हैं कि पहले का मुख लिफ्ट की तरफ, दूसरे का मुख उसके ऑपोजिट मतलब गैलरी के अन्त में

बने कमरे की तरफ, फिर तीसरे का मुख लिफ्ट या स्टेयर्स की तरफ आदि। वैसे सीढ़ी को कवर करने लिए रूम नं. 108 का कैमरा है ही।''

निजाम चौधरी ने सिर्फ सिर हलाया। ''आपके पारिवारिक तालमेल कैसा है?''

काफी देर से खमोश दीपेन्दर ने इस बार अपना मुँह खोला ''हमारा परिवार एक आदर्श परिवार है। हमारे घर में कभी भी आज तक झगड़ा भी नहीं हुआ। पिता जी अक्सर विदेशों में रहते हैं, वे सिर्फ 365 दिनों में लगभग 65 दिन ही यहाँ रहते हैं।''

''क्या मिसेज केसरवानी अक्सर इसी रूम रहती हैं यहाँ?''

''नहीं जब पिता जी यहाँ आते हैं तभी आती हैं, अन्यथा घर पर ही रहती हैं।'' जवाब दीपेन्दर केसरवानी ने दिया।

''और आप?'' निजाम चौधरी ने बड़े बेटे अरविन्दर से पूछा।

''मैं भी तभी आता हूँ जब अम्मा आती है।'' उसने संक्षिप्त उत्तर दिया।

''अगर अम्मा किसी कारण से नहीं आती तब भी आता हूँ, क्योंकि पिता के लिए हम दोनों भाई उनकी आँखों की तरह हैं।'' अरविन्दर ने अपनी अम्मा के सिर के सफेद बालों को सहलाते हुये कहा।

''आप में से किसी की देख–रेख या छोटे–मोटे काम से कोई घरेलु नौकर भी आता है।'' रोहित कपूर ने पूछा।

''पिता जी अपना काम स्वयं ही करते हैं दीपेन्दर और मेरी भी यही आदत है और अम्मा तीन–चार घंटों के लिए यहाँ आती हैं और फिर यहाँ नौकर की कोई कमी भी नही है। इस दौरान मैं उनके साथ ही रहता हूँ।'' अरविन्दर केसरवानी ने कहा।

''आपके पिता जी की या आप में से किसी की भी किसी से कोई पुरानी रंजिश–वगैरह तो नहीं रही है।''

''नहीं।'' दोनों ने एक साथ कहा।

PRIVATE DETECTIVE AGENCY

क्या आप मृतक को नही जानती हैं? 'नही'। बिल्कुल भी नही।' फिर यह आपके घर में आकर कैसे मरा?' रोहित कपूर ने पूछा। मैं नही जानती सर, इस व्यक्ति को मैने कभी नही देखा। 'आपके घर में या आपका कोई दोस्त जानता हो इसे? 'नही मेरी फैमिली में सिर्फ पापा मम्मी और मैं हूँ। वे इंदौर में रहते है। जबकि मैं यहाँ एक अग्रेंजी न्यूज पेपर में रिपोर्टर हूँ।' उसने अपना आईडी कार्ड दिखाते हुये कहा। 'कमाल है आप लाश से अन्जान हैं जबकि लाश की पोजीशन बता रही है कि वह जिसके साथ यहाँ आया होगा उसे वह बहुत अच्छी तरह जानता होगा।

You may reach Author at:
omkumar331@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-28-9
9 788119 927289